# दुआ - उल - अ'दीला

**(ईमान पर से भटकने से बचने की दुआ.)**

अ'दीला मौत से मुराद, मौत के वक़्त हक़ से बातिल की तरफ़ फिर जाना है, यानी जाँ-कुनी (मौत) के वक़्त शैतान शक में डाल कर गुमराह कर देता है और यू इंसान ईमान छोड़ बैठता है!यही वजह है की दुआओं में ऐसे सूरते हाल से पनाह तलब की गयी है! फ़ख़रुल मोहक़्क़े'क़ीन ने फ़रमाया के जो मौत के वक़्त ईस ख़तरे से महफ़ूज़ रहना चाहता है इसे ईमान और उसूले दीन की दलीलें ज़ेहन में रखना चाहिए और फिर इनको बतौर अमानत ख़ुदा की बारगाह में पेश कर देना चाहिए ताकि मौत की घड़ी में यह अमानत इसे वापस मिल जाए! यह दुआ ईमान की हिफ़ाज़त करती है! सभी मोमिन क़ो चाहिए की शैतान क़ो सूर रखने के लिये ईस दुआ की बराबर तिलावत करें ताकि ईमान पक्का और मज़बूत रहे और ख़ैर का दामन हाथ से न छूटे! मरने के आखरी वक़्त में ईस दुआ की तिलावत ज़रूर करें, गर यह मुमकिन न हो तो किसी और क़ो कहें की ईस दुआ की तिलावत बुलंद आवाज़ में करे, ताकि मरने वाले के ज़ेहन में शैतान कोई शक न डाल सके, अपनों क़ो छोड़ने के ग़म में उदासी न हो, क्योंकि यह सारी शैतानी ताक़त शक और गुमराही पैदा करती है ताकि मरने वाला अपने ईमान पर न मर कर शक, गुमराही और उदासी की मौत मरे!

## अनुवाद पढ़ें

**अल्लाहूम्मा सल्ले अला मोहम्मदीन व आले मोहम्मद.**

**बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

ख़ुदा के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है!

ख़ुदा गवाह है की सिवाए इसके कोई माबूद नहीं, नीज़ मलाइका और बा-इन्साफ़ साहिबे ईल्म भी ईस पर गवाही दे रहे हैं की सिवाए इसके कोई माबूद नहीं जो साहिबे इज़्ज़त व हिकमत वाला है, यक़ीनन ख़ुदा का पसंदीदा दीन इस्लाम ही है और मै जो एक ना-तवां गुनाहगार ख़ताकार हाजतमंद और बे-मायाह बन्दा हूँ मै अपने मून'ईम, ख़ालिक़, राज़िक़ और अपने करम फ़रमा ख़ुदा की गवाही देता हूँ, जैसे इसने अपने ज़ात की गवाही दी है, नीज़ मलाइका और साहिबे ईल्म बन्दों ने भी इसकी गवाही दी है की सिवाए इसके कोई माबूद नहीं जो नेमत एहसान व करम और अता का मालिक है और वो हमेशा साहिबे क़ुदरत और दा'इमी साहिबे ईल्म, जिंदा, यकता, और हमेशगी वाला मौजूद है, सुनने वाला, देखने वाला, इरादे वाला, ना-पसंद करने वाला, पालने वाला, बे'नेयाज़ है और वो ईन सिफ़ात का सही हक़दार है और वो दीगर सिफ़ात का भी मालिक है जो बहुत बड़ी सिफ़ात हैं की

क़ुदरत और क़ुव्वत के वजूद में आने से क़ब्ल वो साहिबे क़ुव्वत था, और वो साहिबे ईल्म था, ईल्म और दलील की ईजाद से पहले वो मुस्तक़िल सुलतान था, जब न कोई मालिक था और न कोई माल, वो ला'ज़वाल पाकीज़ा था, हर हर हाल में की ईस का वजूद क़ब्ल से क़ब्ल और अज़्लों के अज़ल से है और इसकी बक़ा बाद से बाद है की जिसमे न तब्दीली है न ज़वाल, वो अव्वल व आख़िर से बे'नेयाज़ और ज़ाहिर व बातिन में बे]परवाह है, इसके फ़ैसले में ज़ुल्म नहीं, और इसकी मर्जी में ताराफ्दारी नहीं, इसकी तकदीर में सितम नहीं और इसकी हुकूमत से फ़रार मुमकिन नहीं, इसका क़हर आये तो कोई पनाह नहीं, और वो अज़ाब करे तो निजात नहीं, इसकी रहमत ग़ज़ब से पहले है, जिसे वो तलब करे वो फ़रार नहीं कर सकता, ईस ने फ़रीजों में अज़दाद दूर कर दें और तौफीक़ देने में अदना व आला में बराबरी रखी है, हुकुम करदा बातों पर अमल क़ो मुमकिन और गुनाह से बचने का रास्ता आसान कर दिया है, ईस ने वुस'अत व ताक़त से कमतर फ़रीज़े आयद किये हैं, पाक है वो जिसका करम कितना वाज़े और शान कितनी बुलंद है, पाक है वो जिसका नाम कितना उम्दा और एहसान कितना बड़ा है, इसने अपने अदल की तशरीह के लिये अंबिया (अ:स) भेजे और अपने फज़ल व करम की इज़हार की ख़ातिर औसिया क़ो मामूर फ़रमाया और हमें नबियों के सरदार, वलियों में बेहतर बरगुज़ेदों में सब से अफ़ज़ल और पाक्बाज़ों में सबसे बुलंद हज़रत मुहम्मद (स:अ:व:व) की उम्मत में क़रार दिया, हम इनपर ईमान लाये और इनके पैग़ाम पर और क़ुर'आन पर जो इनपर नाज़िल हुआ और इनके जा-नशीन पर जिसे इन्होंने यौमे ग़दीर मुक़र्रर किया और अपनी ज़बान से फ़रमाया के यह हैं अली (अ:स) जो मेरा वसी है और मै गवाही देता हूँ की हज़रत रसूल (स:अ:व:व) के बाद नेकोकार ईमाम (अ:स) और बेहतरीन जानशीन हैं जिन में अली (अ:स) ही काफिरों क़ो खत्म करने वाले हैं, और इनके बाद इनकी औलाद के सरदार हसन (अ:स) बिन अली (अ:स) फिर इनके भाई नवासये रसूल (स:अ:व:व), अल्लाह की रज़ाओं के तलबगार हुसैन (अ:स) हैं, फिर अली (अ:स) बिन अल-हुसैन (अ:स), फिर मुहम्मद बाक़र (अ:स), फिर जाफ़र अल-सादीक़ (अ:स) फिर मुसा काज़िम (अ:स) फिर अली रज़ा (अ:स) फिर मुहम्मद तक़ी (अ:स) हैं इनके बाद अली नक़ी (अ:स) हैं फिर हसन अस्करी अज़-ज़की (अ:स) हैं फिर हज़रत हुज्जत ख़लफ़ क़ाएम अल-मुन्तज़र मेहदी (अ:स) उम्मीद'गाहे ख़ल्क़ हैं, जिनकी बक़ा से दिनया क़ायेम है और इनकी बरकत से मख्लूक़ क़ो रोज़ी मिलती है और इनके वजूद से ज़मीन व आसमान खड़े हैं, और इनके ज़रिये अल्लाह ताला ज़मीन क़ो अदलो-इंसाफ़ से भर देगा, जबकि वो ज़ुल्मो जौर से भर चुकी होगी, मै गवाही देता हूँ की ईन आ'ईम्मा के अक़वाले हुज्जत, इनपर अमल करना वाजिब और इनकी पैरवी फ़र्ज़ है और इन्से मोहब्बत रखना ज़रूरी व लाज़िम है, इनकी अता'अत बाइसे निजात और इन्से मुखाल्फ़त तबाही है और वो सब के सब अहले जन्नत के सरदार हैं, क़यामत में शफ़ा'अत करने वाले और यक़ीनी तौर पर अहले ज़मीन के

ईमाम (अ:स) हैं, वो पसंदीदा औसिया में से अफ़ज़ल हैं, और मै गवाही देता हूँ की मौत हक़ है, क़ब्र में सवाल व जवाब हक़ हैं, और दुबारा उठना हक़ है, क़यामत में हाज़री हक़ है, सेरात से गुज़रना हक़ है, मीज़ाने अमल हक़ है, हिसाब हक़ है, और किताब हक़ है, इसी तरह जन्नत हक़ है, और जहन्नम हक़ है, नीज़ क़यामत आने वाली है, इसमें कोई शक नहीं और अल्लाह इन्हें ज़रूर उठाएगा जो क़ब्रों में हैं! ऐ माबूद! तेरा फज़ल मेरा सहारा, और तेरी रहमत व बख्शीश मेरी उम्मीद है मेरा कोई ऐसा अमल नहीं जिस से मै जन्नत का हक़दार बनू और न ईबादत है के जो तेरी खुशनूदी का बाईस हो सिवाए इसके के मै तेरी तौहीद और अदल पर एताक़ाद रखता हूँ और तेरे फ़ज़ल व एहसान की उम्मीद रखता हूँ और तेरे हुज़ूर तेरे नबी (स:अ:व:व) और इनकी आल (अ:स) की शफ़ा'अत लाया हूँ जो तेरे महबूब हैं और तू सबसे ज़्यादा करम करने वाला और सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है और हमारे नबी मुहम्मद (स:अ:व:व) पर ख़ुदा की रहमत हो जो पाको पाकीज़ा हैं और इनपर सलाम हो, सलामे ख़ास ज़्यादा बहुत ज़्यादा और इन्हें कोई ताक़त व क़ुव्वत मगर वो जो बुलंद व बरतर ख़ुदा से मिलती है! ऐ माबूद! सबसे ज़्यादा रहम करने वाले बेशक मै अपना यह अक़ीदा और दीन में साबित क़दमी तेरे सुपुर्द करता हूँ और तू बेहतरीन अमानतदार है और तुने हमें अमानतों की हिफ़ाज़त का हुक्म दिया है, हमें अपनी रहमत से मेरा यह अक़ीदा ब'वक़ते मर्ग मुझे याद दिला देना! वास्ता तुझे तेरी रहमत का ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले! ऐ माबूद! वक़ते मर्ग ईस अक़ीदे से हटने से मै तेरी पनाह तलब करता हूँ!

**अ'दीला मौत से मुराद, मौत के वक़्त हक़ से बातिल की तरफ़ फिर जाना है, यानी जाँ-कुनी (मौत) के वक़्त शैतान शक में डाल कर गुमराह कर देता है और यू इंसान ईमान छोड़ बैठता है!यही वजह है की दुआओं में ऐसे सूरते हाल से पनाह तलब की गयी है! फ़ख़रुल मोहक़्क़े'क़ीन ने फ़रमाया के जो मौत के वक़्त ईस ख़तरे से महफ़ूज़ रहना चाहता है इसे ईमान और उसूले दीन की दलीलें ज़ेहन में रखना चाहिए और फिर इनको बतौर अमानत ख़ुदा की बारगाह में पेश कर देना चाहिए ताकि मौत की घड़ी में यह अमानत इसे वापस मिल जाए! ईस का तरीक़ा यह है की अक़ाएदे हक़्क़ा क़ो दोहराने के बाद कहें:**

ऐ माबूद, ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले, बेशक मै अपना यह अक़ीदा और दीन में अपनी साबित क़दमी तेरे सुपुर्द करता हूँ; और तू बेहतरीन इमानात्दार है. और तुने हमें अमानतों की हिफ़ाज़त का हुक्म दिया है; बस अपनी रहमत से मेरा यह अक़ीदा मरने के वक़्त मुझे याद दिला देना

बस ईन बुज़ुर्गवार के फ़रमान के मुताबिक़ ईस दुआए अदीला का पढ़ना और ईस के मतलबों क़ो मरने के वक़्त दिल में रखना, हक़ से फिर जाने के ख़तरे क़ो रोकता है! अब रही यह बात की यह दुआ मनक़ूल है या खुद उल्माए कराम ने इसे जमा किया है या बनाया है? ईस बारे में अर्ज़ है की इल्मे हदीस के माहिर और अखबारे अ'ईम्मा (अ:स) के जमा

करने वाले अजल आलम, मोहद'दिस ना'क़द व बा-बसीरत और हमारे उस्ताद मोहददिस आज़म अलहाज मौलाना मिर्ज़ा हुसैन नूरी (ख़ुदा इनके मर'क़द क़ो रौशन करे) का फ़रमान है की मारूफ दुआए अदीला बाज़ उलमा की वज़ा करदा है! यह किसी ईमाम (अ:स) से नक़ल नहीं हुई है और न ही किसी हदीस की किताब में पाई जाती है

ऐसी ही एक **दुआ हिफ्ज़े ईमान** के लिये::-

वाज़े रहे की शेख़ तूसी (अ:र) ने मोहम्मद सुलेमान वेल्मी से रिवायत की है की मै ने **ईमाम जाफ़र सादीक़ (अ:स)** की ख़िदमत में अर्ज़ किया के बाज़ शिया भाइयों का कहना है की ईमान की दो किस्में हैं, यानी एक मोहकम व साबित और दोस्सरा आरजी व इमानती जो ज़ायेल हो सकता है, बस आप मुझे कोई ऐसी दुआ तालीम फ़रमायें के जिसके पढ़ने से मेरा ईमान क़ायेम व साबित रहे और ज़ायेल न होने पाए! ईस पर आप (अ:स) ने फ़रमाया की हर वाजिब नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ा करो ”

**मै राज़ी हूँ इसपर की अल्लाह मेरा रब और हज़रत मोहम्मद (स:अ:व:व) मेरे नबी हैं और इस्लाम मेरा दीन है, और क़ुर'आन मेरी किताब है, और काबा मेरा क़िबला है, और राज़ी हूँ इसपर की अली (अ:स) मेरे मौला और ईमाम हैं, फिर हसन (अ:स) व हुसैन (अ:स), अली (अ:स) इब्ने हुसैन (अ:स), मोहम्मद (अ:स) इब्ने अली (अ:स), जाफ़र (अ:स) इब्ने मोहम्मद, मूसा (अ:स) इब्ने जाफ़र (अ:स), अली (अ:स) इब्ने मूसा, मोहम्मद (अ:स) इब्ने अली (अ:स), व अली इब्ने मुहम्मदीन वल हसन इब्ने अलीयिन वल हुज्जत इब्ने अल हसने की ईन पर अल्लाह की रहमतें हों, मेरे ईमाम हैं! ऐ माबूद! मै राज़ी हूँ की वो मेरे ईमाम (अ:स) हैं; बस इन्हें मुझे से राज़ी फ़रमा दे बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है!.**

और अधिक दुआओं के लिये यहाँ क्लिक करें :
www.IslamInHindi.org / http://hindi.duas.org